स्वर्गीय राव कृष्णपाल सिंह जी, अवागढ़

(एक संस्मरण)

श्री महारावल लक्ष्मण सिंह
डूंगरपूर–राजस्थान

स्वर्गीय राव कृष्णपाल सिंह जी, आवागढ़ से पिछले चालीस वर्षों से भी अधिक समय से मैं परिचित था। उनके जीवन के अन्तिम बीस वर्षों में तो मेरा उनसे बहुत ही निकट का सम्पर्क रहा। वे मेरे अन्यतम और घनिष्ट मित्र थे।

राव साहब एक निष्ठावान, कर्मठ और लगनशील समाज सेवा महानुभाव थे। अपनी निस्वार्थ, अनवरत और एकान्त समाज सेवा के कारण समूचे क्षत्रिय समाज में उन्होनें अत्यन्त सम्मानजनक और उच्च स्थान प्राप्त किया। वे अपने अवसान से पूर्व पन्द्रह वर्ष से भी अधिक समय तक अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के उपाध्यक्ष रहे। इसी अवधि में मेरा उनसे निकठ का सम्बन्ध हुआ। यद्यपि वृद्धावस्था के कारण उनकी शारीरिक क्षमता का शनैः ह्रास हो रहा था ओर वे अधिकांश अस्वस्थ भी रहने लगे थे, तथापि उनका उत्साह और कर्तव्यबोध इतना तीव्र और गहन था कि वे अवस्था ओर स्वास्थ्य की ओर ध्यान दिये बिना महासभा के अधिवेशनों में बराबर भाग लेते रहे। महासभा के अन्तिम अधिवेशन में बहुत अधिक अस्वस्थ होने की अवस्था में भी उन्होनें प्रयत्न पूर्वक सारगर्भित और उद्‌बोधक पन्द्रह मिनट का संक्षिप्त भाषण दिया। उनके समान क्षत्रिय समाज का हितचिन्तक व्यक्ति बिरला ही होगा। उन्होनें समाज के मानस पर अपनी जो अमिट छाप छोड़ी है उसका सहज विस्मरण होना कठिन है।

द्वितीय विश्व महायुद्ध के समय राव साहब ने भारतीय सेना में महत्वपर्ण योगदान दिया है। वे मध्य प्रदेश में स्थित दतिया राज्य के दीवान भी रहे। वे सचमुच एक अनुभवी, दूरदर्शी और विवेकशील व्यक्ति थे। साथ ही एक सरल, सौभ्य और प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व के धनी थे। अपनी इन विशेषताओं के कारण वे अत्यन्त लोकप्रिय बन गये थे। संक्रमण काल में तथा देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् उन्होंने अपने कई मित्र नरेशों को देश और समाज के हित में परमर्श दिया। उनकी सामयिक और समुचित मंत्रणाओं के कारण कई राजे–महाराजे उनके प्रति आदर की भावना रखते थे।

स्वर्गीय राव साहब देश की वर्तमान राजनीति से विक्षुब्ध थे और उनके मन में इसके प्रति ग्लानि थी। इसके उपरान्त भी अपने स्वजनों तथा प्रशंसकों के आग्रहपूर्ण अनुरोध को स्वीकार कर वे सन् 1962 में लोग सभा का चुनाव लड़े। साधनों का आभाव होते हुए भी उनकी लोकप्रियता के कारण सैकड़ों ही नहीं अपतु हजारों कायकर्ताओं ने उनको सहयोग दिया और वे चुनाव में जीते। सांसाद के रूप में उन्होनें लोकसभा के कार्य–क्रमों में जो योगदान दिया वह महत्वपूर्ण और प्रशंसा के योग्य है।

राव साहब सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजा महेन्द्रप्रताप के अन्तरंग मित्र थे। उन्ही की भॉति सारे विश्व में एक शक्तिशाली सरकार के गठन के कल्पना को मूर्त रूप देने के वे प्रबल समर्थक थे। मानव–जाति में स्थायी सुख, शान्ति और समृद्धि के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए विश्व में एक सरकार की स्थापना का उनका स्वप्न चाहे कितना ही अवास्तिविक क्यों न कहा जाये किन्तु यदि निक्षपक्षता से उनके मन्तव्य का विवेचन किया जाये तो उनका यह विचार वास्तविकता को परिधि से बाहर प्रतीत नहीं होता।

राव साहब का अनुकरणीय, भातृ प्रेम भी चिरस्मरणीय रहेगा। अपने अग्रज राजा साहब सूर्यपाल सिंह जो, अवागढ़ के जीवन के उतरार्द्ध के समय उन्होनें जो निष्कपट और आगध स्नेह और सौहार्द निभाया वह अनुकरणीय है।

राव साहब के निधन से क्षत्रिय समाज का एक मूल्यवान रत्न तिरोहित हो गया है। उनका अभाव खटकने वाला है। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा और उत्तर प्रदेश के क्षत्रिय समाज के लिए यह क्षति ऐसी है जिसकी पूर्ति होना कठिन ही है।